Golden Research Thoughts
Vol -1 , ISSUE –4, October - 2011
ISSN:- 2231-5063
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

विचार दर्शन तथा समष्टिवाद में समाजवाद

प्रा. राजेश एम. पटेल

श्री. एस. आर. भाभोर आर्ट्स कॉलेज , सींगवड.

समाजवाद

ब्रिटिश बसुन्धरा पर श्रेणी समाजवाद का प्रादुर्भाव हुआ। ब्रिटेन के कुछ युवा समाजवादियों ने इस समाजवाद को दार्शनिक तथा एक राजनीतिक संगठन के माध्यम से इसे व्यवहारिक स्वरूप प्रदान करने का सद्प्रयास किया। 1906 में ए0जी0 पेन्टी ने श्रेणी समाजवाद की पुनः प्राप्ति नामक ग्रन्थ का प्रणयन करके ब्रिटिश बुद्धिजीवियों के मध्य एक नवीन विचार का निवेश किया। पेन्टी के अनुसार ''मध्यकाल में व्यवसायों का स्वायत्त अस्तित्व था तथा वे शासन सत्ता के सूत्राधार थे। इसी केन्द्रीय विचार को पेन्टी ने वैचारिक गत्यात्मकता प्रदान की। एवी0 आरेन्ज, एस0जी0 हाल्सन, जी0डी0एच0 कोल ने इस सूत्रा को परिष्कृत, परिमार्जित, परिशोधित कर धारदार बनाकर एक राजनीतिक आन्दोलन का स्वरूप प्रदान किया।''

लोकतंत्रा में कार्यरत व्यवसायिक संगठनों के साथ कार्य करते हुए राष्ट्रीय श्रेणियां (नेशनल गिल्ड) जनतांत्रिाक साधनों का अनुप्रयोग करते हुए पारिश्रमिक प्रणाली के अवसान तथा उद्योगों पर श्रमिकों के स्वायत्त प्राधिकार की प्रतिस्थापना का सद्प्रयास करेगी और यही श्रेणी समाजवाद का श्रेय–प्रेय है। श्रेणी समाजवाद का तात्विक सिद्धान्त है व्यवसायिक प्रजातंत्रा। श्रेणी समाजवादियों के अनुसार एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का वास्तविक प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है प्रत्युत उसके सामान्य उद्देश्यों के समूह को व्यक्त करने के लिए अवश्य प्रतिनिधित्व कर सकता है। मध्यकाल में श्रमिक स्वशासित गिल्डों के सदस्य होते थे तथा उत्पादन के साधनों के स्वामी होते थे तथा साथ ही उत्पादन की प्रकृति तथा परिणाम को निर्धारित करते थे। श्रेणी समाजवादियों के अनुसार यदि ऐसी ही प्रणाली की प्रतिस्थापना पुनः कर दी जाय तो वर्तमान समस्याओं का समाधान सम्भव हो जायेगा। 1912 में गिल्ड समाजवाद ब्रिटेन के मजदूर आन्दोलन में एक निश्चित शक्ति हो गयी। 1915 में नेशनल गिल्ड की प्रतिस्थापना की गयी।

श्रेणी समाजवाद के विकास में चार महत्वपूर्ण विचारकों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। इस क्रम में प्रथमतः एम0जे0 पेन्टी की संगणना होती है जिन्हें मौलिक गिल्ड मैन (ओरिजनल गिल्ड मैन) की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। पेन्टी ने जान रस्किन और विलियम मौरिस के मार्ग का अनुसरण करते हुए सुधार के कार्यों तथा अपनी विचारधारा का संकेत दिया तथा मध्यकाल के पुनः प्रतिस्थापना का संकेत दिया। श्रेणी समाजवाद के दूसरे प्रमुख विचारक एच0आर0 आरेंज हैं जिन्होंने ''न्यू एज'' पत्रिाका का प्रकाशन किया जिसे शिक्षित क्रान्तिकारिता का प्रकाश पुंज नाम से जाना गया। उन्होंने इस पत्रिाका के माध्यम से हाब्सन के विचारों का प्रचार–प्रसार किया, जो इस विचार समुदाय के दूसरे महत्वपूर्ण विचारक थे। हाब्सन श्रेणी समाजवाद के अप्रतिम विचारक थे जिन्होंने श्रेणी समाजवाद को आर्थिक आधार प्रदान किया। श्रेणी समाजवाद के सशक्त हस्ताक्षर जी0डी0एच0 कोल थे। कोल ने श्रेणी समाजवाद के लिए प्रचूर साहित्य का सृजन किया जिससे श्रेणी समाजवाद को वैश्विक पहचान मिली। श्रेणी समाजवादी मार्क्स के इस विचार से सहमत हैं कि राजनीतिक शक्ति आर्थिक शक्ति के पश्चात् ही प्राप्त होती है। श्रेणी समाजवादियों की मान्यता है कि राजनीतिक क्षेत्रा में प्रजातंत्रा की प्रतिस्थापना सम्भव नहीं है जब तक कि आर्थिक क्षेत्रा में प्रजातंत्रा न हो। इसीलिए यदि जनतांत्रिाक ढंग से उद्योग संगठित हो जाये तो समाज का जनतांत्रिाक

संगठन स्वतः स्थापित हो जायेगा। श्रेणी समाजवादी सत्ता के केन्द्रीकरण को अनुचित मानते हैं। इसलिए स्थानीय संस्थाओं के विकास तथा व्यवस्था पर बल देते हैं। गिल्ड समाजवादी गिल्ड को लोकतंत्रा के आधार पर संगठित करना चाहते हैं। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि उत्पादन में संलग्न प्रत्येक श्रमिक का मत लिया जाय। यह कार्यकुशलता के मार्ग में बाधक होगा।१

गिल्ड समाजवाद का तर्क है कि गिल्ड के प्रतिनिधि सार्वजनिक मत से चुने जायेंगे। यहां पर यह स्पष्ट कर देना समीचीन होगा कि वे अधिकारी जो किसी पूर्णतः विशिष्ट कार्य को करने के लिए नियुक्त किये जायेंगे। वे केवल उससे सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा ही की जायेगी जिनके सहयोग से वे कार्य करेंगे। दूसरे शब्दों में यह कहना असंगत न होगा कि प्रतिनिधि निर्वाचन का सिद्धान्त यह होगा कि वे उन व्यक्तियों द्वारा चुने जायेंगे जिनके वे प्रतिनिधि होंगे।२

गिल्ड समाजवादियों में उद्देश्य की सम्प्राप्ति के साधनों के सन्दर्भ में मतैक्य का अभाव है। एक प्रवर्ग शांतिमय साधनों द्वारा श्रमिक स्वामित्व की अधिस्थापना करना चाहता है प्रत्युत दूसरा संवर्ग अनुकूल स्थिति में क्रान्तिमय साधनों द्वारा श्रमिक आधिपत्य की प्रतिस्थापना चाहता है।३ कुछ गिल्ड समाजवादी सीधी कार्यवाही का पक्षपोषण करते हैं प्रत्युत् कोल का अभिमत है कि शीघ्रता से क्रान्ति लाना हमारा उद्देश्य नहीं है, हमारा ध्येय है विकास के द्वारा उन शक्तियों को सुदृढ़ करना जिससे भावी क्रान्ति का स्वरूप गृह युद्ध न होकर उसकी परिणति सुनिश्चित परिवर्तन में हो।४

मध्यकालीन श्रेणी व्यवस्था के क्रियान्वयन की असम्भाव्यता, राज्य के कार्यक्षेत्रा का संकुचन, व्यवसायिक प्रतिनिधित्व योजना की अव्यवहारिकता, पृथक्क–पृथक्क श्रेणियों द्वारा स्वशासन की अनभिज्ञता, श्रेणी समाजवादियों के मध्य अधिकांश विषयों पर मतैक्य का अभाव उपर्युक्त आधारों पर श्रेणी समाजवाद की आलोचना होती है परन्तु इन आलोचनाओं–प्रत्यालोचनाओं, के बाद भी गिल्ड समाजवाद ने समाजवाद को एक नवीन गत्यात्मकता प्रदान की।५ औद्योगिक कार्यों की प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण समष्टिवाद में नौकरशाही के खतरों की ओर ध्यानाकर्षण, उद्योगों के प्रबन्धन में श्रमिक सहभागिता की वांछनीयता की ओर ध्यानाकर्षण, उद्योग एवं राजनीति में व्यवसायिक प्रतिनिधित्व का मूल्यवान सुझाव प्रस्तुत करना समाजवादी कार्यक्रमों के लिए अपूर्व वैचारिक योगदान है।

समष्टिवाद

जर्मन समाजवाद एवं अंग्रेजी समाजवाद के वैचारिक मिश्रण से समष्टिवाद का प्रार्दुभाव हुआ। समष्टिवाद का लोकप्रिय नाम ''लोकतांत्रिाक समाजवाद'' है। क्योंकि समष्टिवाद या लोकतांत्रिाक समाजवाद लोकतांत्रिाक प्रणाली से भूमि तथा उद्योगों को निजी स्वामित्व से मुक्त कर उसके ऊपर, राज्य स्वामित्व की प्रतिस्थापना करना चाहता है। समष्टिवाद वह सिद्धान्त है जो केन्द्रीय प्रजातांत्रिाक सत्ता द्वारा श्रेष्ठतम उत्पादन तथा श्रेष्ठतम वितरण व्यवस्था करना चाहता है।६

समष्टिवाद में समष्टि (सम्पूर्ण) अथवा समाज को प्रधानता देते हुए, अथवा समाज को केन्द्र में रखते हुए समाज कल्याण को दृष्टिपथ में रखकर व्यक्ति के कार्यों को नियंत्रिात करता है।७ समष्टिवाद में समाजवाद के साथ–साथ अधिनायकवाद के कुछ लक्षण भी विद्यमान है यथा समष्टिवाद व्यक्ति की तुलना में राज्य को विशेष महत्व प्रदान करता है। इस विचारधारा के अनुसार किसी देश के आर्थिक साधनों का उपयोग केवल श्रमिक वर्ग के हित के लिए नहीं प्रत्युत समस्त समाज के लिए होना चाहिए। समष्टिवाद समाज के प्रत्येक वर्ग से दूसरे वर्ग को अनिवार्य रूप से सम्बद्ध मानते हुए वर्ग संघर्ष के स्थान पर वर्ग सामन्जस्य का पक्षपोषण करती है तथा सम्पूर्ण समाज के कल्याण को अपना ध्येय मानता है। समष्टिवाद व्यक्ति के आर्थिक कार्यों पर राज्य द्वारा पर्यवेक्षण करने तथा आवश्यकतानुसार नियंत्राण का पक्षपोषक है। ऐसा इसलिए आवश्यक था कि पूंजीपतियों के आधिपत्य में संचालित उद्योगों में श्रमिकों से कार्य करवाने की स्वतंत्राता के दुष्परिणाम सामने थे जिसमें श्रमिकों का सर्वाधिक शोषण हुआ। ऐसे कार्य जो समाज के लिए वांछनीय नहीं हैं, लोकहित के प्रतिकूल हैं। समाज को उस पर प्रभावी नियंत्राण करना चाहिए। राज्य द्वारा

प्रभावी नियंत्राण समष्टिवाद की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है। इसीलिए इसे राजकीय समाजवाद की संज्ञा से भी अभिहित किया जाता है ऐसा इसलिए कि यह राज्य के माध्यम से समाजवाद को प्रतिस्थापित करने का प्रयास करता है। यह विचारधारा विकासवाद में अनन्य आस्था रखती है। यह समाज को अन्य जीवंत प्राणियों के समदृश्य विकसित होने वाला तत्व मानता है। विकास एवं ह्रास की प्रक्रियाएं शनैः–शनैः सम्पन्न होती हैं। मनुष्य अपनी बुद्धि के माध्यम से आंशिक तीव्रता अवश्य ला सकता है, प्रत्युत इसमें बलपूर्वक परिवर्तन नहीं लाया जा सकता है। समाज में परिवर्तन शनैः–शनैः क्रमिक सुधारों द्वारा ही हो सकता है न कि सहसा किये जाने वाले क्रान्तिकारी परिवर्तनों से। इस प्रकार समष्टिवाद हिंसात्मक एवं क्रान्तिकारी साधनों के स्थान पर शांतिमय विकास मूलक एवं वैधानिक साधनों द्वारा समाजवाद को स्थापित करना चाहता है। समष्टिवादी सत्ता प्राप्ति के उपरान्त समाजवाद के प्रतिस्थापना के निमित्त उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का पक्षपोषण करता है परन्तु इस प्रक्रिया में समष्टिवादी सदैव जनमत को दृष्टिपथ में रखते हैं, ऐसा इसलिए कि जन विश्वास के अभाव में कोई भी परिवर्तन स्थायी स्वरूप ग्रहण नहीं कर सकता।

समष्टिवादी चिन्तन के अभिकेन्द्र में है– व्यक्ति स्वातंत्रय एवं लोकतंत्रा में अनन्य आस्था। प्रत्येक सामाजिक परिवर्तन लोकतांत्रिक प्रणाली तथा जनता की सहमति से करना चाहता है। समष्टिवाद की कार्य प्रणाली की आधारशिला लोकतंत्रा है। समष्टिवादी जनता के मध्य अपना वैचारिक निवेश करते हैं तथा उसका व्यापक प्रचार–प्रसार करते हैं, इस प्रकार वह जनमत का परिनिर्माण करते हैं। ब्रिटेन में ऐसा ही हुआ। 1900 ई0 में प्रतिस्थापित श्रमिक दल निरन्तर प्रचार–प्रसार के द्वारा अपनी शक्ति को विस्तार देता रहा। 1924 से 1939 तक पूर्ण बहुमत न होते हुए भी श्रमिक दल सदन में सबसे बड़ा दल था और इसके बाद इसकी प्रगति बराबर होती गयी और आज भी निरन्तरता में विद्यमान है। इस दल ने सत्तारूढ़ होने के पश्चात् महत्वपूर्ण उद्योगों का राष्ट्रीकरण किया।

समष्टिवादी समाजवाद के पक्षपोषक वर्ग संघर्ष के स्थान पर वर्ग सामन्जस्य में विश्वास करते हैं। समष्टिवाद शब्द इस बात को ध्वनित करता है कि इसका उद्देश्य समष्टि का अर्थात समाज के सभी वर्गों का कल्याण करना है न कि किसी वर्ग विशेष का। मार्क्सवाद की भांति यह व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा निजी उद्योगों का समूल उन्मूलन नहीं करना चाहता है। यह उद्योगों को कई श्रेणियों में बांटता है। सभी उद्योगों का अनिवार्य रूप से राष्ट्रीकरण नहीं करना चाहता है। केवल उन्हीं उद्योगों पर राज्य का स्वामित्व किया जायेगा जिनका विकास बड़े पैमाने पर हो चुका है।

इस विचारधारा का सिद्धान्त एवं स्वरूप मार्क्सवाद आदि अन्य वादों के समदृश्य स्पष्ट और सुनिश्चित नहीं है। इस विचारधारा के पक्षपोषकों को उदार (लिबरल) उदार लोकतंत्राीय (लिबरल डेमोक्रेट) सामान्य जनता के हित पर बल देने वाला तथा प्रगतिवादी आदि नाम से अभिहित किया जाता है।८

समष्टिवाद कोई संगठित आन्दोलन नहीं है। समष्टिवाद सिद्धान्त एवं मत का कोई निश्चित संस्थापक नहीं है तथा कोई सुनिश्चित सिद्धान्त नहीं है। प्रत्युत समष्टिवाद सामाजिक न्याय, उदारवाद, आर्थिक उदारवाद, आर्थिक लोकतंत्रा तथा औद्योगिक लोकतंत्रा के सिद्धान्त का अनुसरण करता हैं।

विश्व के अधिसंख्य देशों ने समष्टिवाद के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया है। अमेरिका जैसे धुर समाजवाद विरोधी देश में भी समष्टिवाद के मौलिक तत्व को विधिक स्वरूप दिया जा चुका है। 1933 में अपनी आर्थिक नीति के माध्यम से राष्ट्रपति रुजवेल्ट ने श्रमिकों के कार्य के घण्टों, श्रमिकों के पारिश्रमिक दर का निर्धारण, मूल्यों का निर्धारण, व्यक्तियों द्वारा बैंकों में जमा धनराशि की सुरक्षा तथा उत्पादन को नियंत्रित करने वाली विधियों का परिनिर्माण किया।९

प्रथम विश्व युद्ध के बाद बनायी गयी विभिन्न देशों की विधियों में समष्टिवाद के मौलिक सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए कल्याणकारी राज्य बनाने की व्यवस्थाएं अधिकाधिक रूप में स्वीकार की गयी हैं।१०

संदर्भ

1. गिल्ड सोशलिज्म : जी0 डी0 एच0 कोल रिस्टेटेड पब्लिशर्स लन्दन, 1920ए पृष्ठ संख्या 41।
2. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 42।

3. समाजवाद : डॉ0 सम्पूर्णानन्द, भारतीय ज्ञान पीठ, वाराणसी, पंचम संस्करण, संवत 2002ए पृष्ठ संख्या 295।
4. गिल्ड सोशलिज्म : जी0 डी0 एच0 कोल, पृष्ठ संख्या 183.187।
5. माडर्न पोलिटिकल थियरी : सी0 ई0 एम0 जोड, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस लन्दन, 1953ए पृष्ठ संख्या 54।
6. रिसेन्ट पोलिटिकल थाट : एफ0 डब्लू0 कोकर एपलीएनशन सेनचुरी प्रेस, न्यूयार्क 1964ए पृष्ठ संख्या 565।
7. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 555।
8. राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त : डॉ0 बीरकेश्वर प्रसाद सिंह, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994ए पृष्ठ संख्या 270।
9. आधुनिक राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त : जगदीश चन्द्र जौहरी, सीमा जौहरी, स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 1999ए पृष्ठ संख्या 565।
10. माडर्न पोलिटिकल थियरी : सी0 एम0 जोड आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस लन्दन, 1953ए पृष्ठ संख्या 93।

प्रा. राजेश एम. पटेल
श्री. एस. आर. भाभोर आट्र्स कॉलेज , सींगवड.